दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला

कला एकीकृत शिक्षा एवं सृजनशील अधिगम

05-06 मार्च 2025

आयोजक

शिक्षाशास्त्र विभाग

शैक्षिक अध्ययनशाला

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(एक केंद्रीय विश्वविद्यालय)

विश्वविद्यालय: एक परिचय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (पूर्व नाम सागर विश्वविद्यालय) की स्थापना 18 जुलाई 1946 को भारत के महान् शिक्षाविद्, प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य डॉक्टर हरीसिंह गौर के द्वारा की गई है। कुल 1300 एकड़ के वृहद् भू-भाग में फैला हुआ यह विश्वविद्यालय 15 जनवरी 2009 को संसद के अधिनियम द्वारा एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में घोषित हुआ। वर्तमान में 11 अध्ययनशालाओं और 38 शिक्षण विभागों से युक्त इस केंद्रीय विश्वविद्यालय में शैक्षिक बहु-माध्यम अनुसंधान केंद्र, पाण्डुलिपि संसाधन केन्द्र और यू.जी.सी. मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र भी स्थित हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ एक समृद्ध पुस्तकालय, स्टेडियम, ऑडिटोरियम, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग छात्रावास, बैंक, डाकघर, उच्च श्रेणी का अतिथि गृह, अस्पताल तथा शिक्षकों और कर्मचारियों के आवास की सुविधा उपलब्ध है।

शिक्षाशास्त्र विभाग

शिक्षाशास्त्र विभाग की स्थापना वर्ष 1961 में 'पोस्ट ग्रेजुएट बेसिक ट्रेनिंग कॉलेज' (पीजीबीटी) के रूप में मध्य प्रदेश शासन द्वारा की गयी थी। वर्ष 1967 में इस ट्रेनिंग कॉलेज को 'विश्वविद्यालयीन शिक्षा महाविद्यालय' के रूप में उन्नत किया गया। संसद के एक अधिनियम के द्वारा 15 जनवरी 2009 को सागर विश्वविद्यालय के एक केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में उन्नयन के पश्चात, इस 'विश्वविद्यालयीन शिक्षा महाविद्यालय' को उसकी सभी संस्थागत मानवीय एवं भौतिक सुविधाओं सहित विश्वविद्यालय के एक विभाग 'शिक्षाशास्त्र विभाग' के रूप में 27 मार्च 2011 को स्थापित किया गया। पुनः शिक्षा मंत्रालय (तत्कालीन मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय) की पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक और शिक्षण मिशन (पीएमएमएनएमटीटी) योजना के अंतर्गत शिक्षाशास्त्र विभाग को शिक्षाशास्त्र अध्ययनशाला में उसके दो केन्द्रों यथा सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा केंद्र एवं अध्यापक शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु केंद्र के साथ उन्नत कर दिया गया। वर्तमान में शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के साथ-साथ सामान्य शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक सञ्चालन किया जा रहा है जिसमें बी.ए. बी.एड./बी.एससी. बी.एड. (4 वर्षीय एकीकृत एवं अभिनव कार्यक्रम), एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (आईटीईपी), एम.एड., बी ए. (शिक्षाशास्त्र) और एम.ए. (शिक्षाशास्त्र) के साथ-साथ पीएच.डी. (शिक्षाशास्त्र) कार्यक्रम सम्मिलित हैं।

संगोष्ठी-सह-कार्यशाला

कला एकीकरण शिक्षा अनुभवात्मक अधिगम का एक शिक्षणशास्त्र है। कला एकीकृत शिक्षा की अवधारणा से तात्पर्य अन्य विषयों के साथ कला के एकीकरण करने से है। कला के एकीकरण का तात्पर्य है कि विभिन्न प्रकार की कलाएं जैसे दृश्य कला, प्रदर्शन कला और साहित्य कला को शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं का एक अभिन्न अंग बनकर शिक्षण को रोचक और मनोरंजक बनाना। कला के एकीकरण का तात्पर्य पाठ्यक्रम को भी कला एकीकृत बनाएं जाने से है, जिसमें कला कक्षा-कक्ष में सीखने-सीखाने का आधार बन जाती है। वर्तमान समय में कला का क्षेत्र व्यापक हो गया है क्योंकि इसमें जीवन के सभी तरह के अनुभवों को शामिल कर लिया गया है। इस विचार ने कला की भूमिका से संबंधित प्राचीन दृष्टिकोण को बदल दिया है। आज कला सिर्फ पेंटिंग, शिल्प, मूर्तिकला अथवा.भवन निर्माण से संबंधित विचार ही नहीं है अपितु सभी तरह के अनुभवों को समझने तथा मापने का एक तरीका भी है जिसमें हमारे दिन-प्रतिदिन के अनुभव भी शामिल होते हैं। इसके अन्तर्गत हम प्राकृतिक, मानवीय तथा सामाजिक घटकों, उनके रंगों, गति, लय एवं सौंदर्य की बात करते हैं। सभी व्यक्ति दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली अनंत वस्तुओं का चुनाव तथा मूल्यांकन करते हैं एवं कई छोटे-छोटे कायो में अपनी कलात्मक पसंद तथा नापसंद को प्रदर्शित करते हैं। यह हमारी सभी वस्तुओं जैसे- कमरे की सजावट, पुस्तकों, खेलों व वस्त्रों आदि दैनिक उपयोग की वस्तुओं में परिलक्षित होती है। इसलिए कला एक सार्वभौमिक अनुभव है, यह सिर्फ कुछ व्यक्तियों तक ही सीमित नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में कला का एकीकरण न केवल शिक्षार्थियों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है, बल्कि उनके समग्र व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने कला-आधारित शिक्षा और सृजनशील अधिगम को प्राथमिकता दी है जिससे शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण और व्यावहारिक बनाया जा सके। इसके तहत शिक्षार्थियों के बौद्धिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को बढ़ावा देना, महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इस संगोष्ठी-सह-कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य शिक्षा में कला, एकीकृत दृष्टिकोण और सृजनशील अधिगम को बढ़ावा देने हेतु एक ठोस और व्यावहारिक मंच प्रदान करना है।

मुख्य गतिविधियाँ

इस संगोष्ठी-सह-कार्यशाला के प्रथम दिवस कला आधारित शिक्षण तकनीकों एवं सृजनशील अधिगम को प्रोत्साहित करने वाले तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें प्रतिभागियों को व्यवहारिक प्रशिक्षण हेतु विषय-विशेषज्ञों दवारा विभिन्न कला संबंधी तकनीकों का वास्तविक प्रदर्शन किया जाएगा। संगोष्ठी-सह-कार्यशाला के दूसरे दिन तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें विद्वानगणों के द्वारा संगोष्ठी-सह-कार्यशाला के विषय एवं उपविषयों से सम्बंधित अपने-अपने शोध-पत्रों का वाचन किया जाएगा।

संगोष्ठी के प्रस्तावित उपविषय

1. कला एकीकृत शिक्षा के सिद्धांत और प्रभाव
2. कला आधारित शिक्षा का शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया में महत्व
3. कला एकीकृत शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
4. सृजनशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए कला आधारित शिक्षा
5. पारंपरिक, क्षेत्रीय और लोक कलाओं का शिक्षण में समावेश
6. नृत्य, संगीत, चित्रकला और रंगमंच के माध्यम से शिक्षण-अधिगम
7. मल्टीमीडिया और डिजिटल कला आधारित शिक्षण
8. समावेशी शिक्षा और कला का योगदान
9. विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए कला आधारित अधिगम
10. अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु और कला आधारित शिक्षण
11. कला एकीकृत शिक्षण: मुद्दे एवं चुनौतियाँ
12. स्टीम आधारित शिक्षा: अंतर्विषयक शिक्षण के माध्यम से समग्र विकास
13. कला और तकनीकी का समन्वय
14. डिजिटल कला और सृजनशील अधिगम
15. कला और शिक्षा के माध्यम से सामाजिक समरसता का निर्माण
16. शिक्षा में बहुविषयक दृष्टिकोण: कला, भाषा, गणित और विज्ञान का एकीकरण
17. सृजनशील अधिगम के लिए कला आधारित मूल्यांकन के नए पैमाने

शोध आलेख आमंत्रण

राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में प्रतिभाग करने के इच्छुक सम्बन्धित विद्यार्थी, शोधछात्र, विद्यालयी शिक्षक एवं उच्च शिक्षा में कार्यरत शिक्षक राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला के विभिन्न उपविषयों के आलोक में शोध-पत्र/आलेख सार अधिकतम 300 शब्दों में (हिन्दी-यूनिकोड कोकिला-फॉन्ट साईज़ 14/अंग्रेजी-टाइम्स न्यू रोमन फॉन्ट साईज़ 12) में दिनांक 25 फरवरी, 2025 तक https://forms.gle/VANqeS5LZ8ZEb8sq9 लिंक पर अपलोड सकते हैं। एक शोध-पत्र में अधिकतम एक सह-लेखक की अनुमति है। पूर्ण शोधपत्र 2500 से 3000 शब्दों में 28 फरवरी, 2025 या उससे पहले प्रस्तुत किया जाना चाहिए। प्रमाण-पत्र हेतु प्रत्येक प्रतिभागी को पृथक-पृथक पंजीकरण करना होगा। सह-लेखन के मामले में, शोध-पत्र/आलेख प्रस्तुत करने के लिए कम-से-कम एक लेखक को संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में भाग लेना अनिवार्य है। राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला के बाद इन शोध-पत्रों/आलेखों को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये जाने का प्रस्ताव है।

पंजीयन शुल्क

राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में प्रतिभाग करने के लिए प्रतिभागी को निर्धारित शुल्क का भुगतान कर पंजीकरण करना होगा। पंजीकरण हेतु प्रतिभागी निम्नलिखित लिंक पर जाकर अपना पंजीकरण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला के आयोजन स्थल पर भी नियमानुसार पंजीकरण किया जा सकेगा।

प्रतिभागी	शुल्क (ऑनलाइन)	शुल्क (ऑन स्पॉट)
विद्यार्थी	300 रू.	400 रू.
शोधार्थी	500 रू.	600 रू.
शिक्षक (विद्यालयी)	500 रू.	600 रू.
शिक्षक (उच्च शिक्षा)	600 रू.	700 रू.

SCAN & PAY

Click Here to Register

Name: Development Fundd A C No 4 Regi
Account No: 40520720280
Branch: Saugor University
Bank Name: State Bank of India
IFSC Code: SBIN0001143
UPI ID: 40520720280@sbi

भोजन एवं आवास

राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में प्रतिभाग करने वाले केवल बाहरी प्रतिभागियों को ही आवास की सुविधा प्रदान की जायेगी। पहले पंजीकरण कराने वाले प्रतिभागियों को आवास हेतु प्राथमिकता दी जायेगी। संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में प्रतिभाग करने वाले सभी प्रतिभागियों हेतु भोजन की व्यवस्था है। स्थानीय प्रतिभागियों हेतु भोजन की व्यवस्था केवल दिन में रहेगी।

आयोजन समिति

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता
माननीया कुलपति

कार्यक्रम निदेशक

प्रो. अनिल कुमार जैन
विभागाध्यक्ष एवं संकायाध्यक्ष

सयोजक

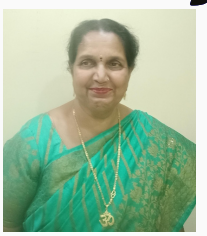

डॉ. रश्मि जैन
पूर्व विभागाध्यक्ष

सह-सयोजक

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ
सहायक आचार्य

आयोजन सचिव

डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति
सहायक आचार्य

परामर्श मंडल

प्रो. मनोज कुमार शास्त्री, प्रो. हरिशंकर सिंह, प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा, प्रो. रत्नेश दास, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. श्वेता यादव, प्रो. भवतोष इंद्र गुरु, प्रो. चंदा बैन एवं प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी

कार्यकारिणी सदस्य

डॉ. रानी दुबे, डॉ. चन्द्रकान्ता जैन, डॉ. प्रीति वाधवानी, डॉ. अनूपी समैया, डॉ. पुष्पिता राजावत, डॉ. रजनीश अग्रहरि, डॉ. सावन कुमारी, डॉ. नवीन सिंह, डॉ. मेघा दास, डॉ. प्रवीण कुमार टी. डी., डॉ. रमाकान्त, डॉ. अपर्णा श्रीवास्तव, डॉ. अखंड शर्मा, डॉ. शिव शंकर यादव, डॉ. शकीला खान, श्री योगेश कुमार सिंह एवं श्रीमती कंचन चौरसिया

महत्वपूर्ण तिथियाँ

शोध-पत्र/आलेख सारांश के जमा करने की अंतिम तिथि: **20 फरवरी, 2025**
पूर्ण शोध पत्र/आलेख जमा करने की अंतिम तिथि: **28 फरवरी, 2025**

शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
डॉ रश्मि जैन - 9407252692
डॉ अभिषेक कुमार प्रजापति - 9074803086
cpdtesagar@gmail.com
www.dhsgsu.edu.in